

प्रेस विज्ञप्ति

लोक भवन, राँची

दिनांक : 24 सितम्बर, 2026 :-

(1) माननीय राज्यपाल-सह-झारखण्ड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची के तृतीय दीक्षान्त समारोह में उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि इस दीक्षान्त समारोह में 142 स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में 93 छात्राएँ हैं। यह बदलते भारत की एक प्रेरक तस्वीर है। उन्होंने कहा कि हमारी बेटियाँ आज शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, खेल और अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से अपनी क्षमताओं को पहचानने, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने तथा उत्कृष्टता के नए मानदंड स्थापित करने का आह्वान किया।

राज्यपाल महोदय ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के योगदानों का स्मरण करते हुए कहा कि वे शिक्षाविद्, राष्ट्रसेवी एवं विचारशील राष्ट्रनिर्माता थे। उन्होंने शिक्षा, राष्ट्रसेवा एवं राष्ट्रीय एकता के लिए अपना जीवन समर्पित किया। उन्होंने

कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम से जुड़े इस विश्वविद्यालय का विद्यार्थी होना ऐसी परंपरा से जुड़ना है, जो ज्ञान के साथ साहस, विचार के साथ विवेक तथा अधिकार के साथ कर्तव्य की भावना को महत्व देती है। विद्यार्थियों को अपने आचरण एवं कर्म से इस विश्वविद्यालय की गरिमा को बनाए रखना चाहिए।

माननीय राज्यपाल ने भारतीय शिक्षा-परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत की ज्ञान-परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध रही है। “विद्या ददाति विनयम्” की हमारी परंपरा ज्ञान के साथ विनम्रता, विवेक एवं संस्कार का महत्व बताती है। नालंदा जैसे शिक्षा केंद्रों ने भारत की ज्ञान-परंपरा को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित किया था। उन्होंने कहा कि ज्ञान केवल जानकारी का संचय नहीं, बल्कि तर्क करने, संवाद करने एवं सत्य की खोज करने की सतत प्रक्रिया है।

राज्यपाल महोदय ने विद्यार्थियों से कहा कि विश्वविद्यालय से प्राप्त ज्ञान एवं दृष्टि का उपयोग वे अपने जीवन और समाज के लिए सार्थक रूप से करें। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल तकनीक, जैव-प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष विज्ञान एवं स्वचालन हमारे जीवन एवं कार्यक्षेत्र की प्रकृति को तेजी से बदल रहे हैं। ऐसे समय में युवाओं को तकनीक का केवल उपभोक्ता बनने के बजाय उसके रचनात्मक उपयोग एवं विकास में योगदान देने के

लिए तैयार रहना चाहिए। तकनीकी प्रगति मानवीय संवेदनशीलता, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जुड़ी होनी चाहिए।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि विद्यार्थियों को अपने भविष्य को केवल नौकरी प्राप्त करने तक सीमित नहीं रखना चाहिए। जहाँ संभव हो, रोजगार प्राप्त करने के साथ-साथ रोजगार सृजन की सोच एवं क्षमता भी विकसित करनी चाहिए। ज्ञान, कौशल, नवाचार एवं उद्यमिता के माध्यम से नए अवसरों का सृजन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश विकसित भारत@2047 के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहा है। आज विश्वविद्यालयों से निकलने वाले युवा 2047 के भारत के महत्वपूर्ण निर्माणकर्ता होंगे। विद्यार्थियों के सपनों में व्यक्तिगत सफलता के साथ समाज की प्रगति और राष्ट्र की उन्नति का संकल्प भी होना चाहिए।

राज्यपाल महोदय ने विद्यार्थियों को सफलता के साथ विनम्रता एवं कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने की सीख दी। उन्होंने कहा कि जीवन में “मैंने क्या पाया?” के साथ यह आत्मचिंतन भी आवश्यक है कि “मैंने समाज को क्या दिया?”
